Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज़	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्जूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्स्रुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत्न	रत्न	दुर्लंच्य	दुर्लंघ्य	सद्गन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्शांत	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थै	उज्र	उ ज़	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	ह्रास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	कॉफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्रात	इज़्जत	स्रेह	स्नेह	वक्फ़	वक़्फ़	लड्डू	ਕਵੂ	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ह्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सलह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुर्री	कुर्री
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कटू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख़्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्ज़ी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़	सपत्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख	फ़ख़	त्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।। अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'धामा धा उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याला करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यालाएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारिरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शल्क बढा, नहीं बढेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिप-कार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हैंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लि-पकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हट्जें मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39.950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्स-पीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफो-कस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेंट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18,4एमपी सीएक्स फार्मेंट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्य1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी $\sqrt{\frac{3.5-5.6}{6}}$ किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू 1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिख़े, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंद्रबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में हुबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है और शानदार अहसास है। केकेआर

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करेंं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

से होता, इस बखेडे को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

दुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहत सी नाँह-नूह की और कहा - परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing	पपहपवपवहवव	Rakar spacing	पपळूपवपवळूवव	पपद्वपवपवद्ववव
पपकपवपवकवव	पपक्रपवपवक्रवव	IIII - II - II - II - II - II - II - I	पपक्षपवपवक्षवव	पपद्धपवपवद्धवव
पपखपवपवखवव	पपख़पवपवख़वव	ЧЧ ж ЧवЧафаа	पपञ्चपवपवञ्चवव	पपद्भपवपवद्भवव
पपगपवपवगवव	पपग़पवपवग़वव	पपख्रपवपवख्रवव		पपद्मपवपवद्मवव
पपघपवपवघवव	पपज़पवपवज़वव	पपग्रपवपवग्रवव	Conjunct spacing	पपश्मपवपवश्मवव
पपङ्पवपवङवव	पपड़पवपवड़वव	पपघ्रपवपवघ्रवव		पपद्पवपवद्दवव
पपचपवपवचवव	पपढ़पवपवढ़वव	पपङ्गपवपवङ्गवव	पपक्तपवपवक्तवव	पपन्भपवपवन्भवव
पपछपवपवछवव	पपफ़पवपवफ़वव	पपच्चपवपवच्चवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपन्मपवपवन्मवव
पपजपवपवजवव	पपयपवयवव	पपछ्रपवपवछ्रवव	पपछ्यपवपवध्यवव	पपल्जपवपवल्जवव
	पपक्षपवपवक्षवव	पपज्रपवपवज्रवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपल्थपवपवल्थवव
पपझपवपवझवव	पपज्ञपवपवज्ञवव	पपञ्चपवपवञ्चवव	पपज्जपवपवज्जवव	पपल्भपवपवल्भवव
पपञपवपवञ्चव		पपञ्जपवपवञ्जवव	पपञ्थपवपवज्थवव	पपल्मपवपवल्मवव
पपटपवपवटवव	Vowel spacing	पपट्रपवपवट्रवव	पपज्यपवपवज्यवव	पपल्यपवपवल्यवव
पपठपवपवठवव		पपठ्रपवपवठ्रवव	पपञ्सपवपवज्सवव	पपल्मपवपवल्मवव
पपडपवपवडवव	पपञ्चपवपवञ्चवव	पपड्रपवपवड्रवव	पपछ्यपवपवछ्यवव	पपल्जपवपवल्जवव
पपढपवपवढवव	पपञुपवपवञुवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपट्यपवपवट्यवव	पपल्भपवपवल्भवव
पपणपवपवणवव	पपॲपवपवॲवव	पपण्रपवपवण्रवव	पपठ्यपवपवठ्यवव	पपष्टपवपवष्टवव
पपतपवपवतवव	पपइपवपवइवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपष्टपवपवष्टवव
पपथपवपवथवव	पपईपवपवईवव	पपथ्रपवपवथ्रवव	पपट्यपवपवट्यवव	पपष्ठपवपवष्ठवव
पपदपवपवदवव	पपउपवपवउवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपट्टपवपवट्टवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपधपवपवधवव	पपऊपवपवऊवव	पपध्रपवपवध्रवव	पपट्ठपवपवट्ठवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपनपवपवनवव	पपएपवपवएवव	पपन्नपवपवन्नवव	पपठ्ठपवपवठ्ठवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपपपवपवपवव	पपऐपवपवऐवव	पपप्रपवपवप्रवव	पपह्रुपवपवड्ठवव	पपह्मपवपवह्मवव
पपफपवपवफवव	पपऍपवपवऍवव	पपफ्रपवपवफ्रवव	पपड्डपवपवड्डवव	पपह्यपवपवह्यवव
पपबपवपवबवव	पपऎपवपवऎवव	पपब्रपवपवब्रवव	पपढूपवपवढूवव	
पपभपवपवभवव	पपआपवपवआवव	पपभ्रपवपवभ्रवव	पपत्तपवपवत्तवव	पपह्नपवपवह्नवव गण्डाम्बर्ग्यस्य
पपमपवपवमवव	पपओपवपवओवव	पपम्रपवपवम्रवव	पपत्खपवपवत्खवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपयपवपवयवव	पपऔपवपवऔवव	पपग्रपवपवग्रवव	पपत्थपवपवत्थवव	
पपरपवपवरवव	पपऋपवपवऋवव	पपरूपवपवरूवव	पपत्नपवपवत्नवव	U/Uu variant spacing
पपलपवपवलवव	पपऋपवपवऋवव	पपल्लेपवपवल्लवव	पपत्सपवपवत्सवव	पपहुपवपवहुवव
पपळपवपवळवव	पपलपवपवलवव	पपव्रपवपवव्रवव	पपत्यपवपवत्यवव	पपहूपवपवहूवव
पपवपवपववव	पपॡपवपवॡवव	पपश्रपवपवश्रवव	पपद्धपवपवद्धवव	पपहृपवपवहृवव
पपशपवपवशवव	£ £	पपष्रपवपवष्रवव	पपद्गपवपवद्गवव	पपहृपवपवहृवव
पपषपवपवषवव		पपस्रपवपवस्रवव	पपद्वपवपवद्भवव	पपहुंपवपवहुंवव
पपसपवपवसवव		पपह्रपवपवह्रवव	पपद्भपवपवद्भवव	पपहूपवपवहूवव
			- water water	8 8

Khula - Regular v. 1.002 December 3, 2014 10:52 PM

पपरुपवपवरुवव
पपरूपवपवरूवव
पपदुपवपवदुवव
पपदूपवपवदूवव
पपदृपवपवदृवव
Vowel sign spacing
पपपंपपरंपपकंपप

पपपॅपपरॅपपकॅपप पपपँपपरंपपकंपप पपपॅपपरॅपपकॅपप पपपैपपरेपपकेपप पपपेंपपरेंपपकेंपप पपर्पेपपरेंपपर्केपप पपपेपपरेपपकेपप पपपेंपपरेंपपकेंपप पपपेंपपरेंपपकेंपप पपपैपपरैपपकैपप पपपैंपपरैंपपकैंपप पपपैंपपरैंपपकैंपप

पपपापपरापपकापप पपपिपपरिपपकिपप पपपीपपरीपपकीपप पपपींपपरींपपकींपप पपपीँपपरीँपपकीँपप पपपॉपपरॉपपकॉपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपोपपरोपपकोपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपॉंपपरॉंपपकॉंपप पपपोपपरोपपकोपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोँपपरोँपपकोँपप

पपपीपपरीपपकीपप पपपौंपपरौंपपकौंपप पपपौँपपरौँपपकौँपप

पपपूपपरुपपकुपप पपपूपपरूपपकूपप पपपुपपरूपपकृपप पपपृपपरृपपकृपप पपपूपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकुपप

पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप पपर्पेपपर्रेपपर्केपप पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप पपर्पेपपर्रेपपर्केपप पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप

पपपऽपवपववऽवव पप?पवपव?वव पपप:पवपवव:वव

Numeral spacing	पपफ, पवफ.	पपआ, पवआ.	पपद्द, पवद्द.
0000000000	पपब, पवब.	पपओ, पवओ.	पपष्ट, पवष्ट.
0000808088	पपभ, पवभ.	पपऔ, पवऔ.	पपष्ट, पवष्ट.
0080808888	पपम, पवम.	पपऋ, पवऋ.	पपष्ठ, पवष्ठ.
0070808788	पपय, पवय.	पपऋ, पवऋ.	पपह्ल, पवह्ल.
0030808388	पपर, पवर.	पपल, पवल.	पपह्न, पवह्न.
0080608888	पपल, पवल.	पपॡ, पवॡ.	पपह्न, पवह्न.
००५०१०१५११	पपळ, पवळ.		पपह्न, पवह्न.
००६०१०१६११	पपव, पवव.		पपह्न, पवह्न.
००७०१०१७११	पपश, पवश.	पपङ्ग, पवङ्ग.	
००८०१०१८११	पपष, पवष.	पपछ्र, पवछ्र.	पपहु, पवहु.
००९०१०१९११	पपस, पवस.	पपट्र, पवट्र.	पपहूँ, पवहूँ.
	पपह, पवह.	पपठ्र, पवठ्र.	पपह, पवह.
Letter-punct spacing	पपक़, पवक़.	पपड्र, पवड्र.	पपह्, पवहृ.
पपक, पवक.	पपख़, पवख़.	पपद्र, पवद्र.	पपहु, पवहु.
पपख, पवख.	पपग़, पवग़.	पपद्र, पवद्र.	पपहूँ, पवहूँ.
पपग, पवग.	पपज़, पवज़.	पपर्र, पवर्र.	पपरुं, पवरुं.
पपघ, पवघ.	पपड़, पवड़.	पपह्न, पवह्न.	पपरू, पवरू.
पपङ, पवङ.	पपढ़, पवढ़.	पपळ्र, पवळ्र.	पपदु, पवदु.
पपच, पवच.	पपफ़, पवफ़.		पपदू, पवदू.
पपछ, पवछ.	पपय, पवय.	पपक्त, पवक्त.	पपर्वें, पवर्वें.
पपज, पवज.	पपक्ष, पवक्ष.	पपड्य, पवड्य.	
पपझ, पवझ.	पपज्ञ, पवज्ञ.	पपछ्य, पवछ्य.	-
पपञ, पवञ.		पपट्ट, पवट्ट.	पपक; पवक:
पपट, पवट.	पपअ, पवअ.	पपट्ठ, पवट्ठ.	पपख; पवख:
पपठ, पवठ.	पपऄ, पवऄ.	पपठ्ठ, पवठ्ठ.	पपग; पवग:
पपड, पवड.	पपॲ, पवॲ.	पपड्ढ, पवड्ढ.	पपघ; पवघ:
पपढ, पवढ.	पपइ, पवइ.	पपड्ड, पवड्ड.	पपङ; पवङ:
पपण, पवण.	पपई, पवई.	पपढ़ु, पवढ़ु.	पपच; पवच:
पपत, पवत.	पपउ, पवउ.	पपद्ध, पवद्ध.	पपछ; पवछ:
पपथ, पवथ.	पपऊ, पवऊ.	पपद्ग, पवद्ग.	पपज; पवज:
पपद, पवद.	पपए, पवए.	पपद्ध, पवद्ध.	पपझ; पवझ:
पपध, पवध.	पपऐ, पवऐ.	पपद्भ, पवद्भ.	पपञ; पवञ:
	பார் புகர்	पपद्घ, पवद्घ.	गाप्त्रः गत्त्रः

पपऍ, पवऍ.

पपऎ, पवऎ.

पपन, पवन.

पपप, पवप.

पपद्ध, पवद्ध.

पपट; पवट:

पपठ; पवठ:

पपड; पवड:	पपॲ; पवॲ:	पपड्ढ; पवड्ढ:	पपघ। पवघ:	पपड़। पवड़:	पपह्न। पवहः	पपरू। पवरू:
पपढ; पवढ:	पपइ; पवइ:	पपडु; पवडु:	पपङ्। पवङ:	पपढ़ पवढ़:	पपळू। पवळू:	पपदु। पवदुः
पपणः; पवणः	पपई; पवई:	पपढ़ू; पवढ़ू:	पपच। पवच:	पपफ़ पवफ़:	113/1133	पपदू। पवदू:
पपत; पवत:	पपउ; पवउ:	पपद्धः पवद्धः	पपछ। पवछ:	पपय्र। पवयः	पपक्त। पवक्तः	पपदृ। पवदृ:
पपथ; पवथ:	पपऊ; पवऊ:	पपद्गः, पवद्गः	पपज। पवज:	पपक्ष। पवक्ष:	पपड्य। पवड्य:	11411148
पपद; पवदः	पपए; पवए:	पपद्धः पवद्धः	पपझ। पवझ:	पपज्ञ। पवज्ञ:	पपछ्य। पवछ्य:	_
पपधः पवधः	पपऐ; पवऐ:	पपद्भः, पवद्भः	पपञ पवञ:	1 1911 1 1911	पपट्ट। पवट्ट:	पपक! पवक?
पपन; पवन:	पपऍ; पवऍ:	पपद्वः, पवद्वः	पपट पवट:	पपअ। पवअ:	पपट्ठ। पवट्ठः	पपख! पवख?
पपप; पवप:	पपऎ; पवऎ:	पपद्धः पवद्धः	पपठ। पवठ:	पपॐ। पवॐ:	पपठ्ठ। पवठ्ठ:	पपग! पवग?
पपफ; पवफ:	पपआ; पवआ:	पपद्दः पवद्दः	पपड पवड:	पपॲ। पवॲ:	पपड्ट पवड्ट:	पपघ! पवघ?
पपब; पवब:	पपओ; पवओ:	पपष्टः; पवष्टः	पपढ पवढ:	पपइ। पवइ:	पपडू पवडू:	पपङ! पवङ?
पपभ; पवभ:	पपऔ; पवऔ:	पपष्टः; पवष्टः	पपण। पवण:	पपई। पवई:	पपढ़ू पवढ़ू:	पपच! पवच?
पपम; पवम:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठ:	पपत। पवत:	पपउ। पवउ:	पपद्ध। पवद्धः	पपछ! पवछ?
पपय; पवय:	पपऋ; पवऋ:	पपह्न; पवह्न:	पपथ। पवथ:	पपऊ। पवऊ:	पपद्ग। पवद्गः	पपज! पवज?
पपर; पवर:	पपलः; पवलः:	पपह्नः, पवह्नः	पपद। पवदः	पपए। पवए:	पपद्व। पवद्व:	पपझ! पवझ?
पपलः पवलः	पपलृ; पवलृ:	पपह्न; पवह्न:	पपध। पवध:	पपऐ। पवऐ:	पपद्भ। पवद्भः	पपञ! पवञ?
पपळ; पवळ:	11/6, 14/6.	पपह्न; पवह्न:	पपन। पवन:	पपऍ। पवऍ:	पपद्व। पवद्व:	पपट! पवट?
पपवः पववः		पपह्नः, पवह्नः	पपप पवप:	पपऎ। पवऎ:	पपद्ध। पवद्धः	पपठ! पवठ?
पपशः; पवशः	पपङ्ग; पवङ्ग:	11(4) 11(4)	पपफ। पवफ:	पपआ। पवआ:	पपद्द। पवद्द:	पपड! पवड?
पपषः, पवषः	पपछ्र; पवछ्र:	पपहु; पवहु:	पपब। पवब:	पपओ। पवओ:	पपष्ट्। पवष्टः	पपढ! पवढ?
पपस; पवस:	पपट्र; पवट्र:	पपहू; पवहू:	पपभ। पवभ:	पपऔ। पवऔ:	पपष्ट पवष्ट:	पपण! पवण?
पपहः; पवहः	पपठ्र; पवठ्र:	पपहः; पवहः:	पपम। पवम:	पपऋ। पवऋ:	पपष्ठ। पवष्ठ:	पपत! पवत?
पपक़; पवक़:	पपड्र; पवड्र:	पपहः; पवहः:	पपय। पवय:	पपऋ। पवऋ:	पपह्न। पवह्नः	पपथ! पवथ?
पपख़; पवख़:	पपद्र; पवद्र:	पपहुँ; पवहुँ:	पपर। पवर:	पपल्। पवलः	पपह्न। पवह्नः	पपद! पवद?
पपग़; पवग़:	पपद्र; पवद्र:	पपहू; पवहू:	पपल। पवल:	पपॡ। पवॡ:	पपह्न। पवह्न:	पपध! पवध?
पपज़; पवज़:	पपर्; पवर्:	पपरु; पवरु:	पपळ। पवळ:	1 1,61 1 1,6.	पपह्न। पवह्न:	पपन! पवन?
पपड़; पवड़:	पपह्न; पवह्न:	पपरू; पवरू:	पपव। पवव:		पपह्न। पवह्न:	पपप! पवप?
पपढ़; पवढ़:	पपळ्र; पवळ्र:	पपदु; पवदु:	पपश। पवश:	पपङ्ग। पवङ्गः	11(4) 11(4)	पपफ! पवफ?
पपफ़; पवफ़:		पपदू; पवदू:	पपष्। पवषः	पपछ्र। पवछ्र:	पपहु। पवहु:	पपब! पवब?
पपयः; पवयः:	पपक्तः; पवक्तः	पपदृ; पवदृ:	पपस। पवसः	पपट्र। पवट्रः	पपहू। पवहू:	पपभ! पवभ?
पपक्ष; पवक्ष:	पपड्य; पवड्य:		पपह। पवह:	पपठ्र। पवठ्र:	पपह्न। पवहः	पपम! पवम?
पपज्ञ; पवज्ञ:	पपछ्य; पवछ्य:	_	पपक्र। पवकः	पपड्र। पवड्र:	पपहॄ। पवहॄ:	पपय! पवय?
	पपट्ट; पवट्ट:	पपक। पवकः	पपख्र। पवख़:	पपद्र। पवद्र:	पपह्र्। पवह्रु:	पपर! पवर?
पपअ; पवअ:	पपट्ठ; पवट्ठ:	पपख। पवख:	पपग़। पवग़:	पपद्र। पवद्र:	पपहूं। पवहूं:	पपल! पवल?
पपऄ; पवऄ:	पपठ्ठ; पवठ्ठः	पपग। पवग:	पपज्ञ। पवज़:	पपर्। पवर्:	पपरु। पवरु:	पपळ! पवळ?

पपव! पवव?	पपङ्ग! पवङ्ग?		पपफ-फपव	पपआ-आपव	पपद्-द्दपव	"डपवपड"
पपश! पवश?	पपछ्र! पवछ्र?	पपहु! पवहु?	पपब-बपव	पपओ-ओपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष्! पवष?	पपट्र! पवट्र?	पपहूं! पवहूं?	पपभ-भपव	पपऔ-औपव	पपष्ट-ष्टपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपठ्र! पवठ्र?	पपहृं! पवहृं?	पपम-मपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपड्र! पवड्र?	पपहॄ! पवहॄ?	पपय-यपव	पपऋ-ऋपव	पपह्न-ह्नपव	"थपवपथ"
पपक़! पवक़?	पपद्र! पवद्र?	पपह्रु! पवह्रु?	पपर-रपव	पपल-लपव	पपह्न-ह्नपव	"दपवपद"
पपख़! पवख़?	पपद्र! पवद्र?	पपहूँ! पवहूँ?	पपल-लपव	पपॡ-ॡपव	पपह्न-ह्नपव	"धपवपध"
पपग़! पवग़?	पपरू! पवरू?	पपरुं! पवरुं?	पपळ-ळपव		पपह्न-ह्नपव	"नपवपन"
पपज़! पवज़?	पपह्न! पवह्न?	पपरू! पवरू?	पपव-वपव		पपह्न-ह्नपव	"पपवपप"
पपड़! पवड़?	पपळू! पवळू?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव	पपङ्र-ङ्रपव		"फपवपफ"
पपढ़! पवढ़?		पपर्दू! पवदूं?	पपष-षपव	पपछ्र-छ्रपव	पपहु-हुपव	"बपवपब"
पपफ़! पवफ़?	पपक्त! पवक्त?	पपदृं! पवदृं?	पपस-सपव	पपट्र-ट्रपव	पपहूँ-हूँपव	"भपवपभ"
पपय़! पवय़?	पपड्य! पवड्य?		पपह-हपव	पपठू-ठ्रपव	पपह-हंपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपछ्य! पवछ्य?	-	पपक़-क़पव	पपडू-ड्रपव	पपह्द-हृपव	"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपक-कपव	पपख़-ख़पव	पपद्र-द्रपव	पपह्र–ह्रुपव	"रपवपर"
	पपट्ठ! पवट्ठ?	पपख-खपव	पपग्न-ग़पव	पपद्र-द्रपव	पपहू–हूपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपठ्ठ! पवठ्ठ?	पपग-गपव	पपज़-ज़पव	पपर्-रूपव	पपरु-रुपव	"ळपवपळ"
पपऄ! पवऄ?	पपड्टु! पवड्ट?	पपघ-घपव	पपड़-ड़पव	पपह-ह्रपव	पपरू-रूपव	"वपवपव"
पपॲ! पवॲ?	पपड्डु! पवड्डु?	पपङ-ङपव	पपढ़-ढ़पव	पपळ्-ळ्पव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपइ! पवइ?	पपढ्ढृ! पवढ्ढृ?	पपच-चपव	पपफ़-फ़पव	पपक्त-क्तपव	पपदू-दूपव	"षपवपष"
पपई! पवई?	पपद्ध! पवद्ध?	पपछ-छपव	पपय़-य़पव		पपदृ-दृपव	"सपवपस"
पपउ! पवउ?	पपद्ग! पवद्ग?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पपड्य-ड्यपव पपछ्य-छ्यपव		"हपवपह"
पपऊ! पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव		-	"क़पवपक़"
पपए! पवए?	पपद्भ! पवद्भ?	पपञ-ञपव		पपट्ट-ट्टपव	"कपवपक"	"ख़पवपख़"
पपऐ! पवऐ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपट्ठ-ट्ठपव	"खपवपख"	"ग़पवपग़"
पपऍ! पवऍ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपठ-ठपव	पपऄ-ऄपव	पपठु-ठुपव	"गपवपग"	"ज़पवपज़"
पपऎ! पवऎ?	पपद्! पवद्द?	पपड-डपव	पपॲ-ॲपव	पपड्ड-ड्डपव	"घपवपघ"	"ड़पवपड़"
पपआ! पवआ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपढ-ढपव	पपइ-इपव	पपडु-ड्रुपव	"ङपवपङ"	"ढ़पवपढ़"
पपओ! पवओ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपण-णपव	पपई–ईपव	पपढु-ढुपव गणद-स्मत	"चपवपच"	"फ़पवपफ़"
पपऔ! पवऔ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपद्ध-द्धपव गणद-टाप्त	"छपवपछ"	"य़पवपय़"
पपऋ! पवऋ?	पपह्न! पवह्न?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपद्ग-द्गपव गणद्ग-द्राप्त	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपऋ! पवऋ?	पपह्न! पवह्न?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपद्व-द्वपव गणद्य-द्राप्त	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपलृ! पवलृ?	पपह्न! पवह्न?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपद्भ-द्भपव गणट-टणट	"ञपवपञ"	
पपॡ! पवॡ?	पपह्न! पवह्न?	पपन-नपव	पपऍ-ऍवव	पपद्व-द्वपव पपद्ध-द्वपव	"टपवपट"	"अपवपअ"
	पपह्न! पवह्न?	पपप-पपव	पपऎ-ऎपव	17 % ~%14	"ठपवपठ"	"ऄपवपऄ"

"ॲपवपॲ" "इपवपइ"	"डुपवपडु" "टाप्टाप्ट"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base
"ईपवपई"	"ढ्रुपवपढ्ढ" "द्धपवपद्ध"	पवप ₹१०१ वपव	पपकिपपकिंपपर्किपप
"उपवपउ"	'दूपवपद्ग"	पवप ₹२०१ वपव	पपखिपपखिंपपर्खिपप
"ऊपवपऊ"	'दूपवपद्व''	पवप ₹३०१ वपव	पपगिपपगिंपपर्गिपप
"एपवपए"	"द्भपवपद्भ"	पवप ₹४०१ वपव	पपघिपपघिंपपर्घिपप
"ऐपवपऐ"	, अववव्यक्ष "द्वपवपद्व"	पवप ₹५०१ वपव	पपङ्गिपपङ्गिपपङ्गिपप
"ऍपवपऍवव	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹६०१ वपव	पपचिपपचिंपपर्चिपप
"ऎपवपऎ"	"द्पवपद्"	पवप ₹७०१ वपव	पपछिपपछिंपपर्छिपप
"आपवपआ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप ₹८०१ वपव	पपजिपपजिंपपर्जिपप
"ओपवपओ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप ₹९०१ वपव	पपझिपपझिंपपर्झिपप
"औपवपऔ"	"ष्ठपवपष्ठ"		पपञिपपञिंपपर्ञिपप
"ऋपवपऋ"	"ह्नपवपह्न"	०००,०१०,०११	पपटिपपटिंपपर्टिपप
"ऋपवपऋ"	"ह्नपवपह्न"	००१,०१०,१११	पपठिपपठिंपपर्ठिपप
"लपवपल"	"ह्नपवपह्न"	००२,०१०,२११	पपडिपपडिंपपर्डिपप
"ॡपवपॡ"	"ह्रपवपह्न"	००३,०१०,३११	पपढिपपढिंपपर्ढिपप
(१२१५१)१	"ह्रपवपह्न"	००४,०१०,४११	पपणिपपणिंपपर्णिपप
"ङ्पवपङ्र"	(a 1 4 1 (a	००५,०१०,५११	पपतिपपतिंपपर्तिपप
"छ्पवपछ्र"	"ਵਧਰਧਵ"	००६,०१०,६११	पपथिपपथिंपपर्थिपप
"ट्रपवपट्र"	"हुपवपहु" "ट्युटपट"	००७,०१०,७११	पपदिपपदिंपपर्दिपप
"ठ्रपवपठ्र"	"हूपवपहू" "ट्रामाट"	००८,०१०,८११	पपधिपपधिंपपर्धिपप
"ड्रपवपड्र"	"हपवपह" "हृपवपहृ"	००९,०१०,९११	पपनिपपनिंपपर्निपप
"द्रपवपद्र"			पपपिपपपिंपपर्पिपप
"द्रपवपद्र"	"हुपवपहु" "ट्रावपट"	०००.०१०.०११	पपफिपपफिंपपर्फिपप
"ऱ्पवपऱ्"	"हूपवपहू" "रुपवपरु"	008.080.888	पपबिपपबिंपपर्बिपप
"ह्रपवपह्र"	"रूपवपरू"	००२.०१०.२११	पपभिपपभिंपपर्भिपप
"ळ्पवपळ्"	"दुपवपदु"	003.080.388	पपमिपपमिंपपर्मिपप
ώ ₄₄₄ ώ		००४.०१०.४११	पपयिपपयिंपपर्यिपप
"क्तपवपक्त"	"दूपवपदू" "ट्याराएट"	००५.०१०.५११	पपरिपपरिंपपरिंपप
"ङ्यपवपङ्य"	"दृपवपदृ"	००६.०१०.६११	पपलिपपलिंपपर्लिपप
"छ्यपवपछ्य"		००७,०१०,७११	पपळिपपळिंपपळिंपप
		००८,०१०,८११	पपविपपविंपपर्विपप
"ट्रपवपट्ट" "ट्रान्सट"		००९.०१० <u>.</u> ९११	पपशिपपशिंपपर्शिपप
"दुपवपद्र" "ट्यावपद"			पपषिपपषिंपपर्षिपप
"ठुपवपठु" "डाग्वाड"			पपसिपपसिंपपर्सिपप
"हृपवपहृ"			

पपहिपपहिंपपर्हिपप पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप

पपर्न्रिपप	पपर्जिपप	पपर्म्भिपप	पपर्ल्दिपप	पपर्स्टिपप	पपळ्रियंप
पपर्न्लिपप	पपर्प्पिपप	पपर्म्मिपप	पपर्ल्पिपप	पपर्स्टिपप	पपळ्रिप
पपर्न्विपप	पपर्प्भिपप	पपर्म्यिपप	पपर्ल्फिपप	पपर्स्डिपप	पपळ्र्वप
पपर्न्सिपप	पपर्प्मिपप	पपर्म्रिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्स्टिपप	पपर्स्यिप
पपर्न्हिपप	पपर्प्यिपप	पपर्म्लिपप	पपर्ल्भिपप	पपर्स्तिपप	पपर्क्ष्मिप
पपन्भिर्येपप	पपर्प्रिपप	पपर्म्विपप	पपर्ल्मिपप	पपर्स्थिपप	पपर्क्ष्विप
पपन्भिर्वेपप	पपर्प्लिपप	पपम्शिपप	पपर्ल्यिपप	पपर्स्दिपप	
पपन्म्यिपप	पपर्प्विपप	पपर्म्सिपप	पपर्ल्रिपप	पपर्स्निपप	
पपन्स्टिपप	पपर्ष्मिपप	पपर्म्हिपप	पपर्ल्विपप	पपर्स्पिपप	
पपन्स्यिपप	पपर्प्सिपप	पपम्प्यिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्स्मिपप	
पपर्ह्यिपप	पपर्प्ळिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्बिपप	
पपन्ज्यिपप	पपर्प्त्यिपप	पपम्ब्यिपप	पपिल्र्यिपप	पपर्स्मिपप	
पपन्क्सिपप	पपर्फ्किपप	पपर्म्ब्रिपप	पपर्ल्ह्यिपप	पपर्स्यिपप	
पपन्त्र्यिपप	पपर्फ्जिपप	पपम्भिर्यपप	पपल्क्यिपप	पपर्स्निपप	
पपन्त्सिपप	पपर्फ्टिपप	पपर्म्श्रिपप	पपर्ल्थ्यिपप	पपर्स्लिपप	
पपन्थ्यिपप	पपर्फ्तिपप	पपम्भिर्वेपप	पपर्ल्द्रिपप	पपर्स्विपप	
पपन्थ्विपप	पपर्प्दिपप	पपर्य्यिपप	पपर्श्किपप	पपर्स्सिपप	
पपर्न्द्रिपप	पपर्फ्निपप	पपर्ग्रिपप	पपर्श्खिपप	पपस्म्यिपप	
पपर्न्ह्रिपप	पपर्फ्पिपप	पपर्लिपप	पपर्श्चिपप	पपर्स्क्रिपप	
पपन्ध्यिपप	पपर्फ्मिपप	पपर्व्यिपप	पपश्छिंपप	पपस्त्यिपप	
पपर्म्धिपप	पपर्फ्यिपप	पपर्व्रिपप	पपर्श्टिपप	पपस्थियपप	
पपर्न्प्रिपप	पपर्फ्रिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्श्तिपप	पपस्म्यिपप	
पपन्स्म्यपप	पपर्फ्लिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्श्निपप	पपस्त्विपप	
पपर्प्किपप	पपफ्शिपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्विपप	पपर्स्प्रिपप	
पपर्प्झिपप	पपर्भ्निपप	पपर्ल्किपप	पपर्श्मिपप	पपस्न्यिपप	
पपर्प्टिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्खिपप	पपर्श्यिपप	पपर्ह्लिपप	
पपर्प्विपप	पपर्भ्रिपप	पपर्लिपप	पपर्श्रिपप	पपर्ह्तिपप	
पपर्प्टीपप	पपर्भ्लिपप	पपर्ल्चिपप	पपर्श्लिपप	पपर्ह्यिपप	
पपर्प्डिपप	पपर्भ्विपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्विपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्प्हिपप	पपर्श्र्येपप	पपर्ल्टिपप	पपश्शिपप	पपर्हम्यिपप	
पपर्णिपप	पपर्म्तिपप	पपर्ल्ठिपप	पपर्श्चिपप	पपर्ह्निपप	
पपर्प्तिपप	पपर्म्दिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्स्किपप	पपर्ह्रिपप	
पपर्थिपप	पपर्म्निपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्खिपप	पपर्ह्लिपप	
पपर्प्दिपप	पपर्म्पिपप	पपर्ल्तिपप	पपस्छिंपप	पपर्ह्निपप	
पपर्ष्यिपप	पपर्म्बिपप	पपर्ल्थिपप	पपर्स्जिपप	पपर्ह्विपप	

र्येपप र्पप र्गपप <u>ч</u>ч <u>पप</u> पिप

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपकापपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्टपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्बपपक्भपपक्मपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्ळपपक्ञपपक्चप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्टपपक्फपपक्यपप

पपक्कपपख्वपपखापपख्यपपख्यप पख्छपपख्जपपख्झपपख्अपपख्टपपख्डप पख्डपपख्णपपख्नपपख्थपपख्दपपख्धपपख्नप पख्नपपख्मपपख्कपपख्कपपख्मपपख्मप पख्रपपख्लपपख्लपपख्कपपख्कपपख्शप पख्मपपख्सपपख्लपपख्कपपख्कपपख्नप पख्डपपख्लपपख्कपपख्मप

पपग्कपपग्खपपगगपपग्घपपग्डपपग्चप पग्छपपग्जपपग्झपपग्ञपपग्टपपग्ठपपग्डप पग्डपपग्णपपग्तपपग्थपपग्दपपग्धपपग्नप पग्नपग्यपपग्कपपग्बपपग्भपपग्मपपग्यपपग्रप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्दपपग्कपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्दपपग्कपपग्यपप

पपच्कपपच्खपपञापपघ्यपपच्छपपच्छप पच्छपपघ्जपपच्झपपघ्जपपघ्टपपघ्ठपपघ्डप पच्डपपघ्णपपघ्तपपघ्थपपघ्दपपघ्धपपघ्नप पघ्नपपघ्मपपघ्कपपघ्बपपघ्भपपघ्मपपघ्यप पघ्नपपघ्मपपघ्लपपघ्ळपपघ्ळपपघ्वप पघ्नपपघ्मपपघ्सपपघ्हपपघ्कपपघ्खपपघाप पद्मपपघ्रपपघ्डपपघ्डपप पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपपछफपपछबप पछभपपछनपपछ्यपपछ्पपछरपपछलप पछअपपछ्यपपछ्यपपछशपपछ्षपपछसप पछहपपछकपपछखपपछगपपछजपपछड़प पछहपपछकपपछखपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपञ्चपपज्झपपज्चप पज्छपपज्जपपज्झपपञ्चपपज्टपपज्ठपपज्डप पज्दपपज्णपपज्तपपज्थपपज्दपपज्थपपज्नप पज्नपपज्पपपज्कपपज्खपपज्भपपज्यप पज्रपपज्लपपज्लपपज्ळपपज्लपपज्वपपज्शप पज्यपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्ञप पज्डपपज्दपपज्कपपज्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप पइनपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप पझपपइसपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप पइषपपइसपपइहपपइक्रपपइखपपइग्रपपइजप पइडपपइढपपइफ़पपइसपप पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्घपपञ्डपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्दपपञ्चप पञ्चपपञ्गपपञ्कपपञ्चपपञ्मपपञ्चप पञ्जपपञ्मपपञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्शप पञ्मपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्खपपञ्गप पञ्चपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्खपपञ्गप पञ्चपपञ्कपपञ्कपपञ्चप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्घप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्यप पट्नपपट्पपट्लपपट्ळपपट्कपपट्वपपट्शप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्ढपपट्कपपट्यपप

पप्रकपप्रखपप्रगपप्रघपप्रडपप्रचप पर्छपप्रजपप्रझपप्रजपप्रदपप्रप्रप्रडप पर्ढपप्रणपप्रतपप्रथपप्रदपप्रधपप्रनप पर्नप्रप्रपप्रपप्रपप्रचपप्रथपप्रचपप्रचप पर्रप्रप्रप्रप्रलपप्रखपप्रखपप्रवपप्रशप पर्षप्रप्रप्रप्रसप्रहपप्रकपप्रखपप्रखपप्रशप पर्षप्रप्रदूपप्रकप्रप्रयप्रसप्रखपप्रखपप्रजप पर्इपप्रदूपप्रदूपप्रसप्रयप्र

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्डपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डुप पड्डपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पड्नपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्कपपड्वपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्डपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठप पढ्डपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पढ्नपपढ्पपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पद्रपपढ्सपपढ्लपपढ्ळपपढ्ञपपढ्गप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढुसपढ्डपपढ्कपपढ्यपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्डपपण्चप पण्छपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठप पण्डपपण्णपपण्कपपण्खपपण्कपपण्चप पण्नपपण्पपण्कपपण्ळपपण्ळपपण्चपपण्शप पण्यपपण्सपपण्हपपण्कपपण्खपपण्जप पण्डपपण्ढपपण्कपपण्कपपण्खपपण्जप पण्डपपण्ढपपण्कपपण्यपप

पपत्कपपत्खपपतापपत्यपपत्ङपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्खपपत्णप पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपपत्भप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्रपपत्लपपत्ळप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्थपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्जपपत्डपपत्डपपत्कपपत्यपप

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्चप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्ठपपद्णपपद्तपपद्थपपद्दप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्वपपद्चप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्वपपद्चप पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्झपपद्हपपद्कपपद्खप पद्गपपद्जपपद्डपपद्डपपद्

पपध्कपपध्खपपध्गपपध्चपपध्चपपध्चप पध्छपपध्जपपध्झपपध्जपपध्टपपध्ठपपध्डप पध्वपपध्णपपध्तपपध्थपपध्दपपध्धपपध्नप पध्नपपध्मपपध्नपपध्बपपध्मपपध्यप पध्रपपद्मपपध्नपपध्कपपध्खपपध्मपपध्मप पध्मपपध्सपपध्हपपध्कपपध्खपपध्मपप्रभप पध्मपध्दपपध्मपप्रभप

पपन्कपपन्खपपनापपन्धपपन्डपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्ढप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्नपपन्नपप पन्कपपन्खपपन्थपपन्भपपन्यपपन्नपपन्सपपन्लप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपनापपन्जपपन्डपपन्कपपन्सपपन्सपप

पपःकपपःखपपःगपपःघपपःङपपःचपपःछप पःजपपःझपपःञपपःटपपःठपपःडपपःढप पःगपपःतपपःथपपःदपपःधपपःनपपःनपपःग पपःफपपःबपपःभपपःमपपःयपपञ्चपपःरपपःलप पःळपपःळपपःवपपःशपपःभपपःसपपःहपपःकप पःखपपःगपपःजपपःडपपःइपपःकप

पपप्कपपप्खपपणपपप्घपपप्डपपप्घपपप्छप पप्जपपप्झपपप्जपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्कप पप्तपपप्थपपप्दपपप्थपपप्नपपप्नपप्पपपप्कप पप्अपपप्यपपप्यपपप्रपपप्रपपप्लपपप्ळप पप्अपपप्वपपप्शपपप्यपपप्सपपप्हपपप्कपपप्खप पपापपप्जपपप्डपपप्डपपप्कपपप्यपप पपम्कपपपस्खपपम्गपपभ्घपपम्झपपम्चप पम्छपपम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्झप पम्हपपम्णपपम्तपपभ्थपपम्दपपभ्धपपम्नप पम्नपपम्पपपम्कपपम्बपपभ्भपपम्मपपम्यप प्रमपम्सपपम्लपपम्ळपपम्छपपम्वपप्भाप पम्षपपम्सपपम्हपपम्कपपम्खपपम्गपम्जप पम्हपपम्हपपम्कपपम्यपप

पपभ्कपपभ्खपपभापपभ्झपपभ्झपपभ्झपपभ्छप पभ्जपपभ्झपपभ्जपपभ्दपपभ्धपपभ्नप पभ्रपपभ्लपपभ्खपपभ्खपपभ्यपपभ्रप पभ्रपपभ्लपपभ्कपपभ्खपपभ्यपपभ्रप पभ्सपपभ्लपपभ्कपपभ्खपपभ्यपपभ्रप पभ्सपपभ्लपपभ्कपपभ्खपपभ्यपपभ्रप पभ्सपपभ्रप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्दपपम्धपपम्नपपम्नपपम्प पम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्धपपम्नपपम्नपपम्लप पम्कपपम्ळपपम्वपपम्शपपम्षपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपम्गपपम्जपपम्हपपम्कपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपमापपम्जपपम्हपपम्कप

पपय्कपपय्खपपयापपय्घपपय्ङपपय्चपपय्छप पय्जपपय्झपपय्जपपय्टपपय्ठपपय्डपपय्ढप पय्जपपय्झपपय्अपपय्दपपश्चपपय्नपपय्नप पय्कपपय्अपपय्मपपय्यपप्रपप्यप्रप्यय्लप पय्कपपय्खपपय्नपप्शपपय्भपपय्सपपय्हप पय्कपपय्खपपयापप्यपप्अपपय्हपपय्कप पय्यपप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्डपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्वपपर्पपपर्वप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्कपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्रपपर्लपपर्ळपपर्ळपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्कपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्दप पर्फपपर्यपप

पपन्कपपन्खपपनापपञ्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्जपपन्टपपन्ठपपन्छप पन्जपपन्सपपन्यपप्रूपपन्तपपन्मपप्न्पप पन्कपपन्वपपन्शपपन्यपप्रूपपन्तपपन्तपपन्छप पन्जपपन्वपपन्शपपन्सपपन्तपपन्तपपन्छप पनापपन्जपपन्डपपन्हपपन्मपपन्यपप

पपल्कपपल्खपपलापपल्घपपल्डपपल्चपपल्छप पल्जपपल्झपपल्ञपपल्टपपल्डपपल्डप पल्णपपल्तपपल्थपपल्दपपल्धपपल्नप पल्पपपल्कपपल्खपपल्भपपल्मपपल्यपपल्लप पल्रपपल्लपपल्ळपपल्ळपपल्शपपल्थप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपलापपल्जपपल्डप पल्सपपल्हपपल्कपप पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळफपपळबप पळभपपळमपपळयपपळपपळलपपळलपपळअप पळळपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप पळकपपळखपपळग्रापपळजपपळड़प पळढपपळफपपळयप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळडपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळपपळकप पळभपपळनपपळयपपळपपळपपळलप पळळपपळळपपळवपपळशपपळषपपळसप पळहपपळकपपळखपपळग्रपळजपपळडप पळढपपळकपपळखपप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्चपपश्डपपश्चपपश्खप पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्चप पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नपपश्नप पश्पपपश्कपपश्बपपश्मपपश्मपपश्यपपश्रप पश्रपपश्लपपश्ळपपश्ळपपश्चपपश्शपपश्षप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्चपपश्कपपश्यपप पण्कपपष्खपपषापपष्ठपपष्ठपपष्ठप पष्जपपष्यपपष्पपपष्यपपष्ठपपष्ठपपष्ठप पष्जपपष्यपपष्पपपष्यपपष्ठपपष्ठपपष्ठप पष्जपपष्यपपष्पपपष्यपपष्ठपपष्ठपपष्ठप पष्खपपष्यपपष्ठपपष्ठपपष्ठपपष्ठप पष्खपपष्यपपष्ठपपष्ठपपष्ठपपष्ठप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्डपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्डपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्थपपस्नप पस्नपपस्पपपस्कपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्मपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्छपपस्गप पस्मपपस्सपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गप पस्डपपस्डपपस्कपपस्यपप

पपह्कपपह्खपपट्गपपट्घपपट्घपपट्घपपट्घपपट्घप पह्जपपट्झपपट्ञपपट्टपपट्ठपपट्घपपट्घप पह्णपपट्यपपट्थपपट्घपपट्घपपट्चपपट्मप पट्मपपट्खपपट्भपपद्घपपह्यपपट्सपपट्सप पट्कपपट्खपपट्घपपट्शपपट्घपपट्सपपट्घप पट्कपपट्खपपट्मपपट्घपपट्घपपट्घप पट्कपपट्खपपट्मपपट्घपपट्घपपट्घप पट्मपपट्यपप

पपक्ष्कपपक्ष्यपपक्ष्मपपक्षमप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइडपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइथपपइनपपइपप पइफपपइबपपइभपपइमपप पपइयपपइलपपइळप पइफपपवपपइशपप पपइषपपइसपपइसपप less common half-forms

पपस्कपपस्खपपरगपपस्घपपस्कपपस्चपपस्छप पर्ज्जपपस्झपपस्जपपस्टपपस्ठपपस्डपपस्दप पर्ग्णपपस्तपपर्थ्यपपस्दपपर्थ्यपपर्जपपस्पप पर्म्भपपस्तपप्रभपपरमपप पपर्यपपस्तप पर्ज्जपपर्यप्रवपपरशपप पपर्थ्यपपस्तपपस्तपप

पपत्जकपपत्जखपपत्जगपपत्जघपपत्जङपपत्जच-पपत्जछप

पत्जजपपत्जझपपत्जअपपत्जटपपत्जठपपत्जडप-पत्जढप

पल्जणपपल्जतपपल्जथपपल्जदपपल्जधपपल्जनप-पल्जपप

पल्जफपपल्जबपपल्जभपपल्जमपप पपल्जयपपल्ज-लप

पत्जळपपत्जपपवपपत्जशपप पपत्जषपपत्जसप-पत्जहपप

पपल्थकपपल्थखपपल्थगपपल्थघपपल्थङपपल्थचप-पल्थछप

पत्थजपपत्थझपपत्थञपपत्थटपपत्थठपपत्थडप-पत्थढप

पल्थणपपल्थतपपल्थथपपल्थद्पपल्थधपपल्थनपपल्थ-पप

पल्थफपपल्थबपपल्थभपपल्थमपप पपल्थयपपल्थलप पल्थळपपल्थपपवपपल्थशपप पपल्थषपपल्थसपपल्थ-हपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप पक्रडपपक्रउपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रथपपक्रसपपक्रसपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्जापपञ्चपपञ्ङपपञ्चप

पर्छपपर्ज्जपपर्झपपर्ञ्जपपर्टपपर्छप पर्छपपर्द्धपपर्यापपर्वतपपर्यापपर्द्धपपर्द्धाप पर्ज्जपपर्द्धपपर्द्धपपर्द्धपपर्याप पर्द्यपपर्ज्जपपर्द्धपपर्द्धपपर्याप पर्द्यपपर्ज्जपपर्द्धपप

पपःक्रपपःख्रपपःग्रपपःश्चपपःश्चपपःश्चप पःज्ञपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चप पःग्गपपःत्रपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्मप पःग्रपपःश्चपपःश्मपपःग्नपपःश्चप पःग्रपवपपःश्चपपःश्चपपःश्चपपःश्चप

पपप्रकपपप्रखपपप्रापपप्रघपपप्रहपपप्रचपपप्रखप पप्रजपपप्रह्मपपप्रजपपप्रटपपप्रवपपप्रहपपप्रदप पप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधपपप्रनपपप्रपप पप्रकपपप्रक्षपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रवप पप्रपपवपपप्रशपप पपप्रथपपप्रसपप

पपन्कपपन्खपपन्नापपन्धपपन्छपपन्छपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्दपपन्छपपन्छपपन्छप पन्न्गपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नप पन्नपपन्खपपन्भपपन्नपपन्नपपन्नप पन्नपवपपन्शपपन्भपपन्सपपन्हपप

पपज्रमपपज्रवपपज्रापपज्रमपज्रमपज्रमपज्रमपज्रमप पज्रमपज्रमपज्रमपज्रमपज्रमपज्रमपज्रमप पज्रमपज्रमपज्रमपज्रमपज्रमप पज्रमपज्रमपज्रमपज्रमपज्रमप पज्रमपज्रमपव्रमपज्रमपज्रमपज्रमप

पपइक्रपपइख्रपपइग्रापपइघ्रपपइड्यपपइच्यप पइछ्रपपइज्जपपइझ्रपपइञ्जपपइट्टपपइठ्यपइड्य पइद्रपपद्ग्र्णपपइतपपइश्यपपइद्यपपद्ग्र्थपपइनप पद्ग्रपपदुक्तपपद्ग्रभपपद्गमपप पपइयप पइलपपइळपपइमपवपपइशपपइमपपइसप पडह्मपप

पपञ्कपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्चापपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपप

पपण्कपपण्खपपणापपण्घपपण्डपपण्चपपण्छप पण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्डपपण्डपपण्डप पण्णपपण्जपपण्थपपण्दपपण्धपपण्नपपण्पप पण्कपपण्जपपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्जप पण्ळपपण्णपवपपण्शपप पपण्णपपण्सपपण्डपप

पपश्र्कपपश्र्वपपश्रापपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वप पश्र्जपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वप पश्र्णपपश्र्वपपश्र्यपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्मपपश्र्वप पश्र्मपपश्र्वपपश्र्मपपश्रमपप पपश्र्यपपश्र्मप पश्र्व्यपश्रमपवपपश्रापप पपश्र्वपपश्रमपपश्रमपप

पप्रक्रपप्रख्यपप्रापप्रघपप्रह्मपप्रचपप्रछप प्रज्ञपप्रद्भपप्रचपप्रटपप्रह्मपप्रह्मपप्रदप प्रण्णपप्रतपप्रथपप्रदपप्रधपप्रनपप्रपप प्रक्रपप्रखपप्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलप प्रक्रपप्रभपवपप्रशपप पप्रथपप्रसपप्रह्मपप

पपन्कपपन्खपपन्नापपन्चपपन्डपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्दप पन्गपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्मप

पन्त्रपपभ्रपपम्मपप पपन्मपपन्त्रपपन्त्रपपन्मप वपपन्नापप पपन्मपपन्सपपन्हपप

पप्रक्रपप्रखपप्रगपप्रघपप्रह्मपप्रचपप्रथप प्रजपप्रह्मपप्रजपपप्रदपप्रवपप्रहमपप्रपप्रणप प्रतपप्रथपप्रदपप्रधपप्रजपप्रपप्रपप्रक्षप प्रभपप्रमपप पप्रयपप्रजपप्रजपप्रप्रपप्रप प्रशपप पप्रभपप्रसपप्रहमप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रघपपप्रङपपप्रचप पप्रछपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रदपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रथप पप्रनपपप्रपपपप्रफपपप्रबपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रळपपप्रपपवपपप्रशपप पपप्रयपपप्रसपपप्रहपप

पप्रक्रमप्रखपप्रजापप्रव्यपप्रस्वपप्रस्वप प्रजापप्रस्मप्रक्रमप्रस्वपप्रस्वपप्रस्वप प्रजापप्रताप्रश्चपप्रस्वपप्रस्वपप्रमप्रमप्रमप् प्रजापप्रभपप्रमप्प पप्रस्वपप्रस्वपप्रस्वपप्रस्वप पप्रशापप पप्रस्वपप्रसपप्रस्वपप